Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-2, Year-2025 (July-December) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 439-444 *Journal Website www.academejournal.in*

मधु काँकरिया के उपन्यासों की वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ. नियति कुमारी

सहायक प्राध्यापिका (अतिथि)

नागार्जुन उमेश संस्कृत महाविद्यालय, तरौनी, दरभंगा (बिहार)

सारांश–

आज 'कहानी' एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में जानी जाती है। यह किस्सागोई आगे निकलकर संवादों, मनोविश्लेषणों, फ्लैशबैक और अत्याधुनिक तकनीक से लैस होकर अभिव्यक्ति की अनेक शैली और शिल्पों में ढ़ल रही है। प्रेमचन्द के दौर से गुजरकर कहानी जैनेन्द्र और इलाचन्द्र जोशी की कलम का स्पर्श पाकर श्रृंगार बदलती है और अज्ञेय तथा उसके आगे के रचनाकारों में अपना स्वरूप निखारती है। स्त्री कथा-लेखिकाओं की कहानियों में जहाँ वह स्त्री-संघर्ष को उजागर करती है, वहीं वह वैश्विक फलक पर भी दृष्टि गड़ाए हुए है। आज कहानी जीवन की अनुभूति, सच्चाई और रोजमर्रे से रु-ब-रु है। इसमें आदर्श भी है तो जीवन की तल्ख सच्चाई भी है। इसमें विश्व की घटनाओं का सीधा या आवरण में असर है तो बदलती दुनियाँ से कदम-दर-कदम मिलाकर चलने की कूबत भी। यह हमारे आत्मसंघर्ष की साक्षी बन गई है, तो जीवन-संघर्ष की गवाह भी। बनते मूल्यों को सपोर्ट करती है तो व्यक्ति के बनते-बिगड़ते जीवन-मूल्यों का मूल्यांकन भी कर रही है कहानी। नए कहानीकारों ने जीवन के विघटित होते मूल्यों को भी रेखांकित करने की कोशिश की है। वहीं कहानियों में वैश्वीकरण का स्पष्ट असर दिखाई पड़ता है। चूँकि कहानी और उपन्यास जीवन के परिदृश्य से आती है, अत: आज वैश्वीकरण के कारण जीवन पर पड़ते प्रभावों को भी रेखांकित करने से कहानी नहीं चूकती।

बीज शब्द– वैश्वीकरण, मूल्य-विघटन, स्त्री-संघर्ष, आधुनिकता, बेरोजगारी, महानगरीय जीवन।

प्रस्तावना–

वैश्वीकरण के फलस्वरूप शिक्षा का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ, जिसके कारण आधुनिक समाज की स्त्री में बदलाव आया और उसके सामने अनेक परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, जिसका सामना उसे ही करना पड़ा। मंजुल भगत ने अपनी कहानियों में आधुनिक समाज की स्त्री के जीवन को चित्रित किया है। 'एक मात' और 'अँधेरे की छलाँग' में इसका बखूबी वर्णन किया गया है। राजकुमार की कहानी 'बीच की स्थिति' में एक ऐसे युवक की कहानी है, जो बीस साल लंदन में रहने के बाद अपनी कम्पनी के काम से भारत आता है और अपनी अस्वस्थ माँ को अकेले छोड़कर लंदन वापस चला जाता है, आज भी समाज में बहुत से ऐसे युवक–युवतियाँ हैं, जो विदेश तो जाते हैं और वहीं जाकर बस जाते हैं। यहाँ तक कि अपनी सभ्यता व संस्कृति के साथ अपनी मिट्टी को भी भूल जाते हैं। एक देश से दूसरे देश जाना, चाहे वो व्यापार-विनिमय के संबंध में हो या किसी और संबंध में, किन्तु वहीं होकर रह जाना वैश्वीकरण का प्रभाव नहीं तो और क्या है? नई पीढ़ी की महिला कहानीकारों में ममता कालिया, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, शिवानी, मृदुला गर्ग, मधु काँकरिया के नाम प्रसिद्ध हैं। उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी', 'प्रतिध्वनियाँ', 'दो अँधेरे जिंदगी' और 'गुलाब के फूल' आदि काफी चर्चित हुई। इनकी कहानियों में भारतीय और विदेशी परिवेश से जुड़े जीवन का संत्रास, कुंठा, ऊब, अजनबीपन, परिवेश के कट जाने व अजनबीपन के शिकार

© Copyright @ Authors

व्यक्ति का वर्णन किया गया है। विदेशी परिवेश की मानवीय अनुभूतियों का यथार्थ चित्र अंकित किया गया है। ममता कालिया की कहानियाँ 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'प्रतिदिन', 'एक अदद औरत' आदि प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में जीवन के विविध पक्षों को आधुनिकता के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। शिवानी की कहानियों में वेश्यावृत्ति, गरीबी व कुंठाग्रस्त जीवन को आधार बनाया गया है। इस संदर्भ में 'क्यों' कहानी काफी प्रसिद्ध रही। मृदुला गर्ग की कहानियों में पश्चिमी प्रभाव के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष के टूटते संबंध व पारिवारिक बदलाव को उजागर किया गया है। इन कहानियों में 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'शहर के नाम', 'समागम, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी' आदि प्रमुख हैं। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में 'ललमनियाँ', 'चिन्हार', 'गोमा हँसती है' जैसी कहानियाँ प्रमुख हैं। राजेन्द्र यादव ने इनके बारे में कहा है- "महानगरीय मध्यवर्ग की संघर्ष करती और पाँवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा नारियों के बीच गाँव की मंदा एक अजीब, निरीह निष्कवच, निश्चल, संकल्पदृढ़ नारी का व्यक्तित्व लेकर उभरती है।"[1] ऐसे अनेक कहानीकार हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज व जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इसके साथ-साथ वैश्वीकरण व इस संदर्भ में घटित घटनाओं को भी प्रस्तुत किया है। इनमें मधु काँकरिया जैसी सशक्त लेखिका का भी नाम लिया जाता है। कहानीकारों में मधु काँकरिया की कहानियाँ काफी चर्चित हुई हैं। पूँजीवादी व्यवस्था से विकसित होने वाली महानगरीय सभ्यता में अकेलेपन की पीड़ा, व्यवस्था विरोध, आतंकवाद, बाल मजदूरी, धर्मान्तरण, उत्तरआधुनिक मनोवृत्ति, नक्सलवाद, नशाखोरी आदि विषयों को इनकी कहानियों में दिखाया गया है। पश्चिमी सभ्यता के साथ-साथ आर्थिक स्वाधीनता के लिए घर और बाहर के बीच असहज संबंध स्थापित करती कामकाजी महिला भी इनकी कहानियों की रुपरेखा प्रस्तुत करती है।

I. बीतते हुए-

'बीतते हुए' कहानी संग्रह में कुल 18 कहानियाँ संकलित हैं, जो इस प्रकार हैं– 'नामर्द', 'लेकिन कॉमरेड', 'लेडी बॉस', 'रहना नहीं देश बिराना है', 'लोड शेडिंग' 'बीतते हुए', 'आर आसवो ना', 'मर्द होते हुए', 'बड़ा पोस्टर', 'दरअसल मम्मी', 'उड़ान', 'आसमान कितनी दूर', 'दाखिला', 'शून्य होते हुए', 'फैसला फिर से', 'एक रुकी हुई स्त्री', 'चूहे को चूहा रहने दो', 'अन्वेषण'। इन कहानियों में 'लेकिन कॉमरेड', 'लेडी बॉस', 'रहना नहीं देश बिराना है', 'लोड शेडिंग', 'उड़ान', 'आसमान कितनी दूर', 'दाखिला', 'शून्य होते हुए', 'एक रुकी हुई स्त्री', 'चूहे को चूहा ही रहने दो', कहानियों में वैश्वीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है, जिसमें आधुनिक मनोवृत्ति, नारी जीवन के बदलते रूप, भ्रूणहत्या, अपने स्व की पहचान, आज के बदलते परिवेश में युवाओं की मानसिकता जैसे विषय मुख्य रूप से सामने आते हैं।

वैश्वीकरण के केन्द्र में आजीविका है। इसी आजीविकावाद में पड़कर लेडी बॉस घर-परिवार से अलग कम्पनी की तरक्की को महत्त्व देती है। लेकिन इसके बदले उन्हें प्रसिद्धि नहीं मिली, बल्कि धोखा खाना पड़ा। इस परिस्थिति से मुक्ति पाने के लिए जब वह अपने पति के पास जाना चाहती है, तब पति दूसरी शादी कर लेता है। जिसके विषय में लेखिका कहती हैं– "जब मन उदास-उदास और मुर्झाया-सा रहने लगा तो बहुत दिनों बाद पति की याद शिद्दत से आई और तभी वह जानलेवा खबर मिली कि पति महोदय तब तक अपने आधी उम्र की किसी रशियन महिला से विवाह कर ग्लोबल बन चुके हैं।"[2]

इस प्रकार यह कहानी एक ऐसी नारी को सामने लाती है, जिसे न तो प्रसिद्धि मिली और न ही सुखपूर्ण जीवन। आज की नारी में भी आजीविका के पीछे भागने की प्रवृत्ति विद्यमान है, जिसने पूरे विश्व को ग्लोबल बना दिया है।

© Copyright @ Authors

जिसके परिणामस्वरुप अकेलेपन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। केवल प्रतिष्ठा पाने के लिए अपने परिवार को दाँव पर लगा देना कहाँ तक उचित है? इस संदर्भ में मधु जी का यह कथन तर्कसंगत है- "जीन्स पहनकर जब औरत के जिन्स ही तेजी से बदलने लगे तब यही होता है.....अन्दर की बत्ती गुल और प्रतिभा, इच्छा शक्ति सब शून्य।"[3] इस कहानी में जहाँ वैश्वीकरण का स्पष्ट असर दीखता है, वहीं मूल्य–विघटन के संकेत भी छुपे हैं।

II. और अंत में ईशु (2008ई.)–

यह मधु काँकरिया का दूसरा कहानी-संग्रह है, जिसमें दस कहानियाँ संकलित हैं, जो निम्नलिखित हैं। 'और अंत में ईशु', 'भरी दोपहरी के अँधेरे', 'महाबली का पतन', 'कीड़े', 'फैलाव', 'मुहल्ले में, 'कुल्ला', 'काली पैंट', 'महानगर की माँ' और 'फाइल'। इन सभी कहानियों पर वैश्वीकरण के प्रभावों को बखूबी देखा जा सकता है।

बेरोजगारी व नाकामयाबी के कारण व्यसन का शिकार होने वाली पीढ़ी का वर्णन इस कहानी में किया गया है। डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल का मानना है "उद्देश्यहीन शिक्षा, बढ़ती हुई बेरोजगारी, अस्वस्थ मनोरंजन, उच्च वर्ग के व्यवहारों का अनुकरण तथा भौतिक मूल्यों में वृद्धि वे दशाएँ हैं, जो युवा वर्ग के मानसिक संतुलन को बिगाड़ देती हैं। इससे उत्पन्न होनेवाली निराशा को दूर करने के लिए बहुत से युवा मद्यपान अथवा मादक द्रव्य-व्यसन का शिकार हो जाते हैं।"[4] प्रस्तुत कहानी में इसे ही केन्द्रित किया गया है। वैश्वीकरण का एक बुरा पक्ष 'अर्थ की महत्ता' को विशेष कर जानना और नशाखोरी का आना भी है, जिसने विश्व को अपने गिरफ्त में लिया। वैश्वीकरण ने अर्थ की जिज्ञासा बढ़ाई। इस कहानी का नायक भी उसी दिशा में भ्रमित मनोराज्य का शिकार है।

'भरी दोपहरी के अँधेरे' इस संग्रह की दूसरी कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने आदिवासियों के माध्यम से भुखमरी, गरीबी, शोषण व अत्याचार पर प्रहार किया है। बालू उठाती नन्हीं बच्चियाँ (गुड़िया, टुड्डु और रानी) जिनका बचपन खो गया है। उसे बालू उठाने के लिए बहुत कम वेतन मिलता है। फिर भी वह खुश है, क्योंकि उसके पास रोजगार है। बेरोजगारी के डर से शोषित वर्ग रोजगार पा कर खुश है। इस बेरोजगारी के लिए व्यक्ति नहीं बल्कि व्यवस्था जिम्मेदार है। हजारों वर्षों की जीवन-यात्रा में मनुष्य ने अपने जीवन निर्वाह के लिए स्वतंत्र व्यवस्था बनाई, जिसमें व्यक्ति से श्रम की अपेक्षा की गई है। यह श्रम शारीरिक या बौद्धिक कोई भी हो सकती है। रोजगार की समस्या तब उत्पन्न होती है, जब व्यवस्था किसी के श्रम का उपयोग करने की स्थिति में नहीं होती। आज देश में औद्योगीकरण एवं बड़े उद्योगों के कारण मशीनों से काम होने लगे हैं, जिससे कामगारों में कमी आई है और बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। डॉ. सुनीता कावले कहती हैं– "बेरोजगारी का एक दूसरा पक्ष यह भी होता है कि व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार उचित रोजगार मिलता नहीं तो बेरोजगारी निर्मित होती है।"[5] बिना बिजली पानी के मधुबन गाँव में शिखर जी की पहाड़ियों पर अपनी जिन्दगी बसर करनेवाले डोलीवालों की समस्या का चित्रण किया गया है इस कहानी में। दो वक्त की रोटी के लिए इन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैश्वीकरण के दौर में भी आज भूख और रोटी की समस्या बढ़ी हुई है। कहानीकार ने इस कहानी में इसी का वर्णन किया है।

III. चिड़िया ऐसे मरती है (2011ई.)–

यह मधुजी का तीसरा कहानी संकलन है। इसमें कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं; जैसे-'चिड़िया ऐसे मरती है', 'युद्ध और बुद्ध', 'नन्दीग्राम के चूहे', 'बस दो चम्मच औरत', 'चूहे को चूहा ही रहने दो', 'और अंत में ईशु', 'भरी दोपहरी के अँधेरे', 'फाइल', 'अन्वेषण', 'दाखिला', 'लेकिन कॉमरेड', 'लोड शेडिंग'। इनमें से पहली चार कहानियों

© Copyright @ Authors

के अलावा बाकी सभी कहानियाँ 'बीतते हुए' तथा 'और अंत में ईशु' कहानी-संग्रह में संकलित हैं। इसमें 'बस दो चम्मच औरत' और 'अन्वेषण' शीर्षक कहानी में वैश्वीकरण का प्रभाव नजर नहीं आता है। अतः शेष बची तीन कहानियों का ही यहाँ जिक्र किया जाएगा और उसमें वैश्वीकरण की तलाश की जाएगी। बाकी कहानियों का जिक्र पहले ही हो चुका है।

वैश्वीकरण जब आया, तो सारा देश एक मंच पर उपस्थित हो गया, किन्तु वैश्वीकरण ने मानव-समाज के बीच अर्थ को प्रमुखता दी। अर्थ के इस केन्द्रण में समस्त मानव-संबंधों को अपने चश्मे से देखने के लिए विवश किया। यहाँ तक कि प्रेम और विवाह-संबंध को भी अर्थ कमाने के लिए एक अदद नौकरी ही मध्य एवं निम्न वर्ग का आधार हो गया। 'चिड़िया ऐसे मरती है' कहानी में प्रेम और अर्थ के बीच झूलते, टूटते संबंधों की इसी कथा को कहा गया है।

'चिड़िया ऐसे मरती हैं' इस संग्रह की पहली कहानी है। इसमें बेरोजगार विजय और उसकी प्रेमिका रेशमा की कहानी है। एम.ए. की पढ़ाई के बाद भी विजय को रोजगार नहीं मिल पाता है। रोजगार की तलाश में घूमते समय पुस्तकालय में विजय और रेशमा की मुलाकात होती है। दोनों एक-दूसरे से प्यार करने लगते हैं। रेशमा की माँ बीमार रहती है, इसलिए वह अपनी बेटी की शादी करवाना चाहती है। उसके पिता प्रेम जैसे संबंध को गलत मानते हैं। इसलिए रेशमा उसके साथ भाग जाना चाहती है, किन्तु विजय के पास नौकरी नहीं हैं। इसलिए वह उससे छः महीने का समय माँगता है। इस बीच रेशमा की शादी हो जाती है और वह अपने पति व बच्चों के साथ खुश रहने लगती है।

इस कहानी में बेरोजगारी की समस्या को दिखाया गया है, जिसके कारण विजय और रेशमा वैवाहिक संबंध में नहीं बँध पाते हैं। विजय कहता है– "मैं इस सृष्टि का सर्वाधिक निकृष्ट और अधूरी रचना हूँ, बल्कि एक कीड़ा हूँ, धीरे-धीरे रेंगनेवाला। पराश्रित, परजीवी क्योंकि मनुष्य वह होता है, जिसके पास और चाहे कुछ हो न हो पर एक नौकरी जरूर होती है।"[6]

IV. दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2013 ई.)-

मधुजी ने सभी कहानियों से दस प्रमुख कहानियों को लेकर इस संग्रह की रचना की है। जिनपर पाठकों की सर्वाधिक प्रतिक्रियाएँ मिलीं। इसमें संकलित कहानियाँ हैं- 'युद्ध और बुद्ध', 'चूहे को चूहा ही रहने दो', 'बस...... दो चम्मच औरत', 'नंदीग्राम के चूहे', 'चिड़िया ऐसे मरती है', 'अठारह साल का लड़का', 'काला चश्मा', 'चिड़िया ऐसे जीती है', 'पॉलिथिन में पृथ्वी', 'अन्वेषण'। इनमें से 'चूहे को चूहा ही रहने दो' और 'अन्वेषण', 'बीतते हुए' कहानी संग्रह में संकलित है। 'युद्ध और बुद्ध', 'बस.....दो चम्मच औरत', 'नंदीग्राम के चूहे', 'चिड़िया ऐसे मरती है'- ये सभी कहानियाँ 'चिड़िया ऐसे मरती है' संकलन में संकलित हैं।

इन सभी कहानियों की चर्चा की जा चुकी है। ये कहानियाँ काँकरिया जी की शैल्पिक और वैचारिक उत्कर्ष को व्यक्त करनेवाली है। बांकी बची कहानियाँ 'युद्ध और बुद्ध' संग्रह में संकलित है, जिनकी चर्चा आगे की जा रही है।

V. युद्ध और बुद्ध (2014 ई.)-

मधु काँकरिया का यह पाँचवाँ कहानी संकलन है। इसमें कुल तेरह कहानियाँ संकलित हैं, जो इस प्रकार हैं-'युद्ध और बुद्ध', 'नंदीग्राम के चूहे', 'चिड़िया ऐसे मरती है', 'चिड़िया ऐसे जीती है', 'बस...... दो चम्मच औरत', 'पॉलिथिन

© Copyright @ Authors

में पृथ्वी', 'अठारह साल का लड़का', 'घाटा', 'विरासत', 'मिसफिट', 'काली चील', 'काला चश्मा', 'उसे बुद्ध ने काटा'। इनमें से 'युद्ध और बुद्ध' तथा 'नंदीग्राम के चूहे', 'चिड़िया ऐसे मरती है' संकलन में संकलित हैं, जिसकी चर्चा की जा चुकी है। 'चिड़िया ऐसे जीती है', 'बस....दो चम्मच औरत' कहानी में वैश्वीकरण का प्रभाव नजर नहीं आता है। बांकी बची कहानियों पर वैश्वीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है।

'अठारह साल का लड़का' शीर्षक कहानी इस संग्रह की सातवीं कहानी है। यह कहानी उत्तरआधुनिक मनोवृत्ति को सामने लाती है। वैश्वीकरण के कारण लोग एक देश से दूसरे देश की ओर पलायन कर रहे हैं, जिससे पलायनवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है। विदेशों में पढ़ाई के लिए स्कॉलरशिप मिलता है और हमारे देश में आई.आई.टी. में नामांकन के लिए डोनेशन देना पड़ता है। यही सोचकर राहुल अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध अमेरिका चला जाता है। अविनाश और सुनयना के बेटे राहुल के लिए उसके माँ-बाप की उम्मींद बढ़ने लगती है। वह अंधा हो जाता है। इसकी परवाह किये बिना राहुल इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद पैसे कमाने के लिए अमेरिका जाना चाहता है। उसे अपने देश में कोई भविष्य नजर नहीं आता है। उसे लगता है कि यहाँ सीट पाने के लिए मार्क्स देखते हैं, लेकिन बड़े-बड़े डोनेशन देकर रातों-रात सीट बिक जाते हैं। इससे भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आनन्द कुमार ने 'भूमण्डलीकरण का दौर' लेख में कहा है– "सरकार की छोटी-छोटी सेवाओं से लेकर सर्वोच्च प्रतिष्ठानों तक में भ्रष्टाचार की जितने मुँह उतनी बातें।"[7] राहुल अमेरिका चला जाता है। इससे उसके माता-पिता पूरी तरह टूट जाते हैं। राहुल के साथ-साथ टॉबी, रवि, अजय, विकास आदि इसी विदेशी चकाचौंध की ओर पलायन करते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिकता के विकास के साथ मनुष्य ने यांत्रिक प्रगति के द्वारा अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त की हैं। सुविधा-सम्पन्न जीवन जीने का हर संभव प्रयास लागों ने किया है और उन्हें सफलता भी मिली है। महानगरों के बढ़ते प्रभाव व औद्योगीकरण के फलस्वरुप मनुष्य को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने इसमें काफी मदद की है, किन्तु सब कुछ होने के बावजूद मनुष्य अकेलेपन का शिकार हो रहा है। इस अकेलेपन की त्रासदी से मनुष्य निराशाजनक जीवन की ओर बढ़ रहा है। इससे तनाव, घुटन, संत्रास, कुंठा, निरर्थकता जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसे मधुजी की कहानियों में स्पष्ट देखा जा सकता है। इनकी कहानियों में स्वावलम्बी होते नारी अस्तित्व को भी देखा जा सकता है। आधुनिक जीवन की जटिलताओं ने मानव अस्तित्व को संकटमय बना दिया है। प्राचीन काल में नारी की स्थिति दिन-ब-दिन गिरती जा रही थी। अनेक कथाकारों ने इसे केन्द्रित कर रचनाएँ कीं, जिससे महिला सशक्तीकरण की स्थिति प्रखर हुई। पुरुषवादी समाज ने जहाँ नारी को दासी व उपभोग की वस्तु माना, वहीं दूसरी ओर आज की नारी ने प्रखर रूप से इसका विरोध किया। वह अपने अस्तित्व व स्वातंत्र्य बोध को पहचानने लगी है। इसके लिए वह निरंतर संघर्षरत है। इसे भी मधु जी ने अपनी कहानियों में शामिल किया है।

संदर्भ-सूची–

1. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार– डॉ. वैशाली देशपांडे, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2016, पृ.-134 (उद्धृत)
2. बीतते हुए– मधु काँकरिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ.-46
3. वही, पृ.-37

© Copyright @ Authors

4. भारतीय समाजः मुद्दे एवं समस्याएँ– डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा, 2018, पृ.-243
5. कथाकार मधु काँकरिया– डॉ. सुनीता कावले, रोली प्रकाशन, कानपुर, 2011, पृ.-144
6. चिड़िया ऐसे मरती है– मधु काँकरिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ.-9
7. भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास– नीरू अग्रवाल, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृ.-26 (उद्धृत)

© Copyright @ Authors